सुधा मूर्ति – लेखिका, परोपकारी, शिक्षक

कर्नाटक के एक छोटे से शहर की गलियों में, एक लड़की सपनों की उड़ान भरती थी, जिसका नाम था सुधा। बचपन से ही सुधा के मन में किताबों से गहरी दोस्ती थी। परिवार पढ़ाई को बड़ा महत्व देता था, पर समाज की सोच के कारण आसपास की लड़कियाँ ज़्यादा पढ़ाई नहीं करती थीं।

लेकिन जैसे-जैसे सुधा बड़ी होती गईं, उन्होंने मन में इंजीनियर बनने का सपना संजोया। सुधा ने पूरी हिम्मत के साथ इंजीनियरिंग कॉलेज में दाखिला लिया। वहाँ वह अपनी कक्षा की एकमात्र लड़की थीं, लेकिन सुधा ने मेहनत और लगन के बल पर न केवल लड़कों को पीछे छोड़ा, बल्कि पूरी क्लास में प्रथम स्थान भी हासिल किया।

कॉलेज के बाद सुधा का अगला लक्ष्य था टाटा मोटर्स में इंजीनियर बनना। सुधा का आवेदन पहले तो अस्वीकार हो गया, मगर सुधा ने हार नहीं मानी। दृढ़ता के साथ कंपनी के चेयरमैन जे.आर.डी. टाटा को एक पत्र लिखा, जिसमें अपनी योग्यता और समर्पण का उल्लेख किया। उनका आत्मविश्वास देखकर टाटा मोटर्स ने उन्हें नौकरी दी, जिससे वह कंपनी की पहली महिला इंजीनियर बनीं।

सुधा ने अपने पति नारायण मूर्ति के साथ इंफोसिस की नींव रखी, जिसने भारत को तकनीकी क्षेत्र में वैश्विक पहचान दिलाई। परंतु सुधा मूर्ति का दिल समाज की सेवा में लगा था। सुधा ने इंफोसिस फाउंडेशन की स्थापना की, जिसके ज़रिए हजारों गरीब बच्चों की ज़िंदगी बदल दी।

उन्होंने गाँवों में स्कूल, अस्पताल, पुस्तकालय और आश्रय बनवाए, जिससे लाखों लोगों का जीवन रोशन हुआ। उनका जीवन यह संदेश देता है— "कोई सपना छोटा या बड़ा नहीं होता, अपने सपनों पर विश्वास करो, दिल से मेहनत करो, कभी हार मत मानो, और हमेशा दूसरों के जीवन को बेहतर बनाओ।"

READ MORE STORIES ON
www.bharatkibetiyokikahaniyaan.com/

https://bharatkibetiyokikahaniyaan.com/
https://bharatkibetiyokikahaniyaan.com/